रस निष्पत्ति में फ़िल्मी संगीत का योगदान : एक दृष्टिकोण

वीर विकास
पी॰एचडी॰ शोधाथी
संगीत एवं नृत्य विभाग
कु॰वि॰कु॰

गुरजीत सिंह
पी॰एचडी॰ शोधार्थी
संगीत एवं नृत्य विभाग
कु॰वि॰कु॰

वर्तमान में फ़िल्म या चित्रपट आम जनता के जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है । साधराण जनता के मनोरंजन का प्रिय साधन "फ़िल्म संगीत" ही है । मनुष्य दैनिक जीवन के सभी कार्य एवम् मन के भावों को इसी संगीत के माध्यम से सम्पन्न एवम् शांत करता है । फ़िल्मी संगीत की लोकप्रियता का कारण यह भी है कि इसका सम्बन्ध समाज से सीधा जुड़ा हुआ है । समूचे रूप में फ़िल्म और संगीत का मिला जुला स्वरूप सिनेमा कहा जाता है । क्योंकि सिनेमा ही वह माध्यम जिस से फ़िल्में आम जनता तक पहुंच पाती है । सिनेमा की शुरूआत भारत में परतंत्रता काल में हुई । शुरूआत में भारत में मूक सिनेमा का प्रचलन था फिर धीरे–धीरे संगीत ध्वनि के मिश्रण से फ़िल्मों में एक अलग ही क्रान्ति देखने को मिली, परतंत्रता काल से वर्तमान तक आते–आते आज फ़िल्मी संगीत लोगों के जीवन का एक मुख्य अंग बन गया है ।

फ़िल्मी संगीत :

वह संगीत जिसमें नाट्य (अभिनय कला) और संगीत दोनों का समन्वय होता है । आम जनता में फ़िल्मी संगीत के नाम से प्रसिद्ध है । सीधी सरल भाषा में अगर कहा जाए तो फ़िल्मों (चित्रपटों) में प्रयुक्त होने वाला संगीत फ़िल्मी संगीत कहलाता है । "चित्रपट संगीत उसे कहते हैं, जिसका प्रयोग किसी फ़िल्म में हुआ ।"

फ़िल्मी संगीत में गीत–संगीत, अभिनय, कैमरा, लाईट, आवाज की महत्वता, ध्वनि की उपयोगिता, स्टुडियो आदि का सम्मिलित कार्य रहता है । फ़िल्मों में संगीत का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1931 में "आलम–आरा" फ़िल्म में किया गया ।

फ़िल्मी संगीत एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा बच्चे, जवान, बुढ़े सभी आनंद अनुभूति पाते हैं । चुँकि इस विधा का मुख्य उद्देश्य रंजकता, मधुरता,

रसानुभूति, भावात्मक सौंदर्यता ही है तो यह सीधे तौर पर आम जन पर सीधा प्रभाव छोड़ती है । फ़िल्मी संगीत के द्वारा अनेकों मनुष्य गीत–संगीत के द्वारा रसानुभूति प्राप्त करते हैं । फ़िल्मी संगीत से रस की उत्पत्ति जानने से पहले रस के विषय में जानना आवश्यक प्रतीत होता है ।

रस :

रस हर्ष एवम् प्रसन्नता प्रदान करने का सशक्त माध्यम है । "रस" का सर्वप्रथम वर्णन "नाट्यशास्त्र" में भरतमूनि द्वारा नाट्य के प्रसंग में हुआ ।

"साहित्य में नव–रस माने गए हैं 1. श्रृंगार 2. हास्य 3. करुण 4. रौद्र 5. वीर 6. भयानक 7. वीभत्स 8. अद्‌भुत 9. शांत ।" परंतु संगीत में केवल 8 रसों का प्रयोग किया जाता है । आचार्य भरत ने शांत रस के विषय में वर्णन नहीं किया । उन्होंने केवल श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत का ही वर्णन किया है । इन्हीं मुख्य रसों से 33 भावों की उत्पत्ति होती है । जिन्हें अनुभाव, विभाव जैसी श्रेणियों में बाँटा गया है । जो मनुष्य के मन के भावों को शांत करने में सहायक सि) होते है । इसीलिए विद्वानों ने भी मानव जीवन में रस के महत्त्व को आवश्यक बताया है । तभी तो स्वरों को भी रस निष्पत्ति का कारक कहा गया है । उदाहरण स्वरूप सा, रे से वीर, रौद्र तथा अद्‌भुत रस, ग, नि को करुण, म, प को हास्य, ध को वीभत्स रस का पोषक बताया गया है । वास्तव में जब कोई स्वाभाविक वस्तु कुछ परिवर्तित हो कर मन के अन्दर एक असाधारण नवीनता उत्पन्न कर देती है, तब उसे "रस" कहते हैं ।

फ़िल्मी संगीत द्वारा रसानुभूति :

वैसे तो रस निष्पत्ति के कई कारक हो सकते है जैसे – दृश्य कला, चित्रकला, वास्तुकला आदि श्रव्य कला में काव्यकला । परंतु दृश्य और श्रव्य कला का मिला–जुला स्वरूप होता है : संगीत ।

संगीत चाहे वह शास्त्रीय हो लोक संगीत या सुगम संगीत सभी सुरतों में रस एवं भावों को उत ष्ट रूप में एवं सरल सहज रूप में प्रकट करता है । उदाहरण के लिए मनुष्य जब प्रसन्न होता है तो वह स्वभावतः ही मन को प्रसन्न करने वाला गीत–संगीत सुनता है जिससे की उसके मन में उत्पन्न भावों को वह हास्य रस द्वारा शांत करता है । ऐसे ही फ़िल्मी संगीत मानव के मन में उत्पन्न भावों को शांत करने में एक औषधि का कार्य करता है । क्योंकि फ़िल्मी संगीत में देश–विदेश की संस् ति, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, सामाजिक, प्रेम संबंधी विषयों का ही मुख्यतः समावेश रहता है । जो न केवल एक कला को प्रदर्शित करता है अपितु इसमें साहित्य संगीत नाट्य कला के द्वारा आम जन मानस को इन सभी कलाओं से जोड़कर भी रखता है ।

रस की उत्पत्ति का मुख्य कारक भाव ही होता है । भावों को रस का जनक

माना जाता है । मुख्यतः आठ रसों के आठ स्थायी भाव बताए गए हैं जिनके द्वारा रसोत्पत्ति होती है । परन्तु शांत रस होने के कारण निर्वेद को स्थायी भावों में रखा गया है, रस का प्रमुख आधार भाव ही है तभी तो कहा गया है कि मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले भावों को शांत करने के लिए किसी कला का सहारा लिया जाता है, संगीत इन्हीं भावों, जिज्ञासाओं का शान्त करने का सशक्त माध्यम है ।

भाव उसी प्रकार रस उत्पत्ति के लिए महत्त्वपूर्ण है जिस प्रकार समुद्र खारा तथा मीठा पानी और समस्त द्धअनेकऋ वस्तुओं को आत्मसात कर आत्म रूप बना लेता है, उसी प्रकार स्थायी भाव अपने से प्रतिकूल अथवा अनुकूल किसी भी भाव से विच्छन्न नहीं होता तथा सभी को आत्म रूप बना लेता है ।

रसिक हृदय से सुप्त रूप से स्थित स्थायी भाव, अनुभाव तथा संचारियों के संयोग से तदनुकूल रस में परिणीत हो जाते हैं । इन भावों को जागृत करने में फ़िल्मी संगीत की अग्रिम भूमिका रही है । उदाहरण स्वरूप फ़िल्म "पड़ोसन" जो कि सन् 1968 में रिलीज हुई थी । समस्त फ़िल्म ही हास्य रस पर आधारित थी । इस फ़िल्म का एक गाना "चतुरनार" तो दर्शको को हंसा–हंसाकर लोट–पोट कर देता है । इस गाने को सुनते ही हास्य–रस की उत्पत्ति स्वतः ही हो जाती है । ऐसे ही फ़िल्म "बैजु–बाबरा" जो सन् 1952 में रिलीज हुई थी इसमें वर्णित गीत "ओ दुनिया के रखवाले" से स्वतः ही करुण रस की प्राप्ति होती है जो कि श्रोता के मन को भाव–विभोर कर भगवान् की तरफ आस्था रखने को आकर्षित करती है ।

फ़िल्म "झनक–झनक पायल बाजे" वर्ष 1955 में रिलीज हुई । इस फ़िल्म में इसका शीर्षक एवम् गीत श्रृंगार रस प्रधान ही है ।

ऐसे ही वर्तमान समय में बहुत–सी ऐसी फ़िल्म रीलीज हुई है जिनके गीतों ने मनुष्य के मन में वीरता के भाव को जागृत किया है। जैसे, बाहुबली, जोधा–अकबर, पद्मावत, वीर, अशोका, पानीपत, आदि ।

"फ़िल्म–गुलाल" सन् 2011 में रिलीज हुई । इस फ़िल्म के गीत "आरंभ है प्रचंड बोल" से वीर रस की प्राप्ति होती है । जिसे सुनकर श्रोता के अन्दर यु) करने का भाव जागृत होता है ।

फ़िल्म "रक्त चरित्र" का गीत "मिला तो मिटेगा" भयानक रस की निष्पत्ति करता है।

इसी प्रकार फ़िल्मी संगीत ने मनुष्य के भावों को जागृत कर तथा उन्हें शान्त करने को नव रस उत्पत्ति के लिए अनेकों ऐसे गीतों की रचना की है जो उनके मन–मस्तिष्क पर अलग ही छाप छोड़ते हैं चुँकि फ़िल्में हमारे समाज का दर्पण मानी जाती है । इसी कारण फ़िल्मों में गीतों की रचना भी इस प्रकार से की जाती है कि वो मनुष्य को उसके जीवन से संबंधित ही लगे और उसके मनोरंजन के साथ–साथ उसे शिक्षा देकर समाज का एक सभ्य व्यक्ति बना सके । विभिन्न गीतों से जागृत

होने वाले रस के गीतों की एक सूची इस प्रकार है।

गीत के बोल	फ़िल्म	रस
बरसो रे मेघा	गुरु	वीभत्स रस
कान्हा	वीर	शांत रस
जिन्दगी गले लगा ले	सदमा	शांत रस
मोहे पनघट पे नंदलाल	मुगल–ए–आजम	श्रृंगार
मोहे रंग दो लाल	पद्मावत	श्रृंगार
मन मोहिनी	हम दिल दे चुके सनम	श्रृंगार
चंदन सा बदन	सरस्वती चंदन	श्रृंगार
शिवाय	शिवाय	रौद्र
हम काले है तो क्या हुआ		हास्य रस
साथी मेरे साथी	वीराना	करुण
दो पल	वीर जारा	करुण रस
वीराना	वीराना	भयानक
ताली मार दो हथ थी वीरा	वीर	वीर रस
आरंभ है प्रचंड	गुलाल	वीर रस

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, डॉ॰ विमल, संजय प्रकाशन, 4378/4, बी–209, जे॰एम॰डी॰ रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
2. निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तर प्रदेश) द्वितीय संस्करण, नवंबर, 1989
3. संगीत शास्त्र पराग, गोविन्द राव राजुरकर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, ए–26/2, विद्यालय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर, 302004, प्रथम संस्करण, 1982
4. फ़िल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार, सीमा जौहरी, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002
5. फ़िल्म और फ़िल्मकार, डॉ॰ सी॰ भास्कर राव, कनिष्क पब्लिशर्स, 4697/5–5–21 ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली 110002